INHALT

| In dieser großen Zeit | | | | | | | | 9 |
|---|---|-----|---|---|---|---|---|----------|
| Dialog der Geschlechter | | | : | | | | | 23 |
| Schweigen, Wort und Tat | | | | | | | | 3 I |
| Hier wird deutsch gespuckt | | | | | | | | 34 |
| Glossen | | | | | | | | |
| Ein Tag aus der großen Zeit | | | | | | | | 36 |
| Die wackre Schalek forcht sich nit | | | | | | | | 39 |
| Der seelische Aufschwung | | | | | | | | 41 |
| Die Nebensache | | | | | | | | 43 |
| Formen | | | | | | | | 43 |
| Ein Weib | | | ٠ | | | | | 44 |
| Schmückedeinheim | | | | | | | | 44 |
| Die Freigelassenen | | | | | | | | 44 |
| 's gibt nur an Durchhalter! | | | | | | | | 46 |
| Shakespeare und die Berliner | | | | | | | | 52 |
| Gruß an Bahr und Hofmannsthal . | | | | | | | | 5.5 |
| Tagebuch | | | | | | | | 66 |
| Glossen | | | | | | | | |
| | | | | | | | | 67 |
| Kriegsnamen | | | | | | | • | 68 |
| Drei Engel – drei Räuber Ein Geduldspiel für Groß und Klein . | | | | | • | | • | 69 |
| Kriegsrisiko | | | | • | • | • | • | 70 |
| 9 | | | • | • | ٠ | • | • | 70 |
| Friedensrisiko | • | | ٠ | • | • | • | • | 70 70 |
| Immer feste druff | | | | • | • | • | • | 7I |
| Die Umwertung aller Werte | | | • | • | • | • | • | 71 |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | • • | • | • | • | • | • | 72 |
| Die Geburt der Tragödie | | · · | | • | • | • | • | 72 |
| Zur Genealogie der Moral | | | | • | • | • | • | |
| Metaphysik der Schweißfüße Fortschritte der Wissenschaft | | | | • | • | • | • | 73 75 |
| Wie die Franzosen vor Neid zersprangen | ٠ | | | • | • | • | • | 75 |
| • • | | | | | • | • | • | 76 |
| Eingedeutschtes | | | | | | | • | 78 |
| Philosophie des Mangels | | | | • | | ٠ | • | 78 |
| Ein deutsches Kriegsgedicht | | | | • | | • | • | 70 80 |
| Warum dann also? | | | | • | | ٠ | • | 80 |
| Entrevue (Zusammenkunft) | | | | | • | | • | 80 |
| Meine Anregung | | | | | | ٠ | • | |
| Die Lage in Frankreich | ٠ | | • | • | | | | 80 |

| So leben wir alle Tage | | • | | | • | • | ٠ | | • | ٠ | • | ٠ | | • | • | | 80 |
|-------------------------------------|-----|--------------|-----------|--------|------|----------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|-------------------|
| Auch so leben wir alle | Ta | ge | | | | | | | | | | | | | | | 80 |
| Tell sagt | | | | | | | | | | | | | | | | | 81 |
| Was lese ich da | | | | | | | | | | | | | | | | | 82 |
| Die Feldgrauen . | | | | | | | | | | | | | | | | | 83 |
| Dorten | | | | | | | | | | | | | | | | | 90 |
| Goethes Volk | | | | | | | | | | | | | | | | | 104 |
| Schonet die Kinder! | | | | | | | | | | | | | | | | | 108 |
| Franz Grüner | | | | | | | | | | | | | | | | | 113 |
| Ein deutsches Buch | | | | | | | | | | | | | | | | | 114 |
| Glossen | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Kein Mensch wird glas | nbe | n | | | | | | | | | | | | | | | 123 |
| Zuhause | | | | | | | | | | | | | | | | | 123 |
| Ich höre | | | | | | | | | | | | | | | | | 124 |
| Wien 1917 | | | | | | | | | | | | | | | | | 124 |
| Weltalldarin | | | | | | | | | | | | | | | | | 125 |
| Sie wollen von uns nich | | | | | | | | | | | | | | | | | 126 |
| Der deutsche Professo | | | | | | | | | | | | | | | | | 127 |
| Wippchen oder Prophe | | | | | | | | | | | | | | | | | 128 |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | 128 |
| Fanatismus Die Schuldfrage oder | | | | | | | | | | | | | | | | | 129 |
| - | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Das technoromantisch | | | | | | | | | | | | | | | | | 132 |
| Am Sarg Alexander | | | | | | | | | | | | | | | | | 137 |
| Ein Kantianer und K | | | | | | | | | | | | | | | | | 139 |
| Schändung der Pandor | a | | • | | • | • | | • | • | • | | • | • | • | • | ٠ | 141 |
| Glossen | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Der Praeceptor Germa | ani | ae | | | | | | | | | | | | | | | 144 |
| Lionardo da Vinci . | | | | | | | | | | | | | | | | | 145 |
| Ei-Ersatz Dottofix . | | | | | | | | | | | | | | | | | 145 |
| Was es gibt | | | | | | | | | | | | | | | | | 146 |
| Unsere Pallas Athene! | | | | | | | | | | | | | | | | | 147 |
| Kriegsmüde | | | | | | | | | | | | | | | | | 148 |
| Es ist alles da, es ist ni | | | | | | | | | | | | | | | | | 148 |
| Weltgericht | | | | | | | _ | | | | | | | | | | 150 |
| Die Sintflut | | | | | | | | | | | | | | | • | | • |
| | | | | | | | | | | | | | | | • | • | T 5 A |
| Nachruf | | | | | | _ | | | _ | | | | | | | | · |
| Nachruf | r | 47 | tei | · m | or o | • | ٠ | • | ٠ | • | • | • | • | • | | | 161 |
| Rede am Grabe Pete | rı | 4l | tei | ıbe | erg | s | | | | | | | | | | | 154 161 254 |
| Rede am Grabe Pete Brot und Lüge | r 1 | 4 <i>l.</i> | tei .` | ıbe | erg | s | | | | | | | | | | | 161 254 257 |
| Rede am Grabe Pete | r 1 | 4 <i>l</i> . | ter .` | ıbe | erg | <i>s</i> | | | | | | | | | | | 161 254 |

| Klarstellung | | | | | | | 293 |
|--|-----|------|----|---|---|----|------|
| Der Lächler | | | | , | | | 297 |
| Unsichere Kantonisten | | | | | | | 313 |
| Aus der Sudelküche | | | | | | | 316 |
| Mödling und Wien | | | | | | | 33I |
| An den Polizeipräsidenten | | | | | | | 338 |
| Glossen und Notizen | | | | | | | |
| Ein Brief Rosa Luxemburgs | | | | | | | 340 |
| Antwort an Rosa Luxemburg von einer Unsentim | ent | tale | en | | | | 343 |
| Was nützen ihm die Tausendkronennoten? | | | | | | | 349 |
| Die Grüßer | | | | | | | 351 |
| Eine Richtigstellung | | | | | | | |
| Bei den Tschechen und bei den Deutschen | | | | | | • | 355 |
| | | | | | | • | 362 |
| Monarchie und Republik | ٠ | | | | | • | 367 |
| | | | • | | | • | 373 |
| Theater, Kunst und Literatur | | | • | • | • | • | 379 |
| Von Humor und Lyrik | • | | • | • | • | | 385 |
| Vom großen Welttheaterschwindel | | | • | • | | ٠ | 396 |
| Die Affäre Harden | | | • | • | | | 401 |
| Wilhelms Autorschaft | | | | | | | 409 |
| In eigenster Sache | .** | | | | • | | 413 |
| | | | | | | ٠. | 420 |
| Hochzeitsgäste | | | | | | | 425 |
| Großmann | | | | | | | 427 |
| Hussarek-Sinclair | | | | | | | 445 |
| Dichters Klage | | | | | | | 45 I |
| Glossen | | | | | | | |
| Wien 1923 | | | | | | | 455 |
| Mussolinis Bezähmung | | | | | | | 455 |
| Für Amateure | | | | | | | 457 |
| So ein verflixtes Komma! | | | | | | | 458 |
| Moissi | | | | | | | 458 |
| Aus dem Neandertal | | | | | | | 459 |
| Das österreichische Selbstgefühl | | | | | | | 461 |
| | | | | | | • | |
| Metaphysik der Haifische | • | • | • | • | • | • | 481 |
| Glossen | | | | | | | _ |
| Ein Hakenkreuzlerplakat | | | | | | | 489 |
| Sehnsucht eines Schweidnitzers, mit seinen Gedanke | | | | | | | 489 |
| Einen Einser in Sitten | | | | | | | 492 |
| Einstellung und Impuls oder Wie macht man das? | | | | | | | 495 |

| Sittlichkeit und Kriminalität 49 | 9 |
|--|---|
| Aus Kindern werden Erwachsene 50 | 3 |
| Man darf nicht generalisieren 510 | 0 |
| Beethoven und Goethe - Vorbilder und Lebensführer 51 | 3 |
| Was Herr Castiglioni umsonst erhalten konnte 51 | 9 |
| Herz, was begehrst du noch mehr? 52 | 3 |
| Das Mangobaumwunder 53 | 4 |
| Ein kalter Schauder über den Rücken 54 | 0 |
| Glossen und Notizen | |
| Der Berliner in Wien | 3 |
| Spiel der Wellen | 5 |
| Einen Stüber | 7 |
| Ein sonderbarer Schwärmer | 8 |
| Von denen, die es in Österreich noch gibt 54 | 9 |
| Das haben die Mädchen so gerne | 9 |
| Mit den Negern kann man machen, was man will 55 | 0 |
| Verspielt und vertan | 1 |
| Ein Ereignis | |
| Die Zauberlehrlinge | 3 |
| Zweihundert Vorlesungen und das geistige Wien 56 | • |
| Der Fall Jacobsohn | - |
| | |
| Entlarvt durch Bekessy | 1 |
| Quellennachweis | 3 |